हरियाणा में आर्य समाज और प्रणेता भक्त फूलसिंह

Ravita Rani

Research Scholar (History)

NIILM University

Kaithal Haryana 136027

प्रस्तावना

वैदिक काल में हरियाणा मध्य क्षेत्र के नाम से जाना जाता था। हरियाणा का अर्थ है हरि (विष्णु भगवान) + आयन (घर) – भगवान का घर। इसे हिन्दू धर्म की जन्म स्थली भी माना जाता है। इसे 1 नवम्बर 1966 को पंजाब से अलग करके हरियाणा नाम दिया गया था। हरियाणा की धरती बड़ी पावन व सत्कार के योग्य है। हरियाणा ऋषि मुनियों व वीरों की धरती रहा है। कुरूक्षेत्र में दिए गए 'गीता उपदे"ा' ने तो पूरी दुनिया को आलोकि किया है। समय–समय पर यहां अनेक बुराईयां व कुरीतियां फैली हैं। इनको समाप्त करने के लिए अनेक ऋषि मुनियों व समाज सुधारकों ने काम किया।

19वीं शताब्दी में यहां जाति प्रथा, दहेज प्रथा, मूर्ति पूजा, बाल–विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा व कन्या वध जैसी बुराईयां संक्रमण की भांति फैली थी। इनको समाप्त करने के लिए अनेक समाज सुधारकों के द्वारा यहां आन्दोलन चलाए गए। 19वीं शताब्दी के काल को नव जागरण काल माना जाता है। उस समय आर्य समाज मुख्य आन्दोलन के रूप में चलाया गया। आर्य समाज से जुड़े समाज सुधारकों ने समाज में सामाजिक, धार्मिक व शैक्षिक परिवर्तन किए। अनेक गुरूकुलों व शैक्षिक संस्थानों की स्थापना की। ताकि समाज का हर वर्ग अपने को ऊपर उठा सके और समाज से छूआछूत व जाति प्रथा जैसे भेद–भाव मिटाए जा सकें। अंध वि"वासी समाज को ऊपर उठाया जा सके। आर्य समाज के माध्यम से हिन्दू धर्म का पुनरूत्थाना करना और वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार को बढ़ाना ही इस आन्दोलना का उद्धे"य था। आर्य समाज ने शैक्षणिक, सामाजिक, नारी स"ाक्तीकरण, स्त्री ि"ाक्षा, गौर रक्षा और दलितोद्धार हेतु अनेक कार्य किए। 20वीं शताब्दी के शुरूआत तक आते–आते आर्य समाज की प्रसिद्धि पूरे भारत में हो चुकी थी। अनेक

ि"ाक्षण संस्थान व गुरूकुलों में तो वैदिक धर्म पर आधारित स्वदे"ाी ि"ाक्षा दी जाती थी। इस शोध पत्र में हम हरियाणा में आर्य समाज और प्रणेता भक्त फूलसिंह पर अन्वेषणा पर विचार करेगें।

साहित्य सर्वेक्षण

विद्यामार्तण्ड वि. (1996) का श्री भक्त फूलसिंह के जीवन चरित्र में उद्धे"य था कि आर्य समाज के संपर्क में आने के बाद भक्त फूलसिंह ने अपने जीवन को परिवर्तित करके उद्धे"यों को स्थापित कर लिया। अनेक बुराईयों को त्याग दिया और समाज कार्य म लीन हो गए। आर्य समाज को सहयोग उन्होनें अपनी प्राथमिकता बनाए रखा। **रानी आर. (2017)** भक्त फूलसिंह सामाजिक योदान व बलिदान में भी भक्त फूलसिंह के जीवन कार्यों व समाज में योगदान को बतलाया गया है। **रानी आर. (2018)** ि"ाक्षा में भक्त फूलसिंह का योगदान का उद्धे"य है कि किस प्रकार आर्य समाज के आन्दोलन को क्रियान्वित किया गया व सामाजिक कार्यों व बुराईयों को मिटाया गया। भक्त फूलसिंह ने अग्रिण पंक्ति के रूप में प्रणेता के रूप में कार्य किया।

उन्होनें भैंसवाल गुरूकुल व स्त्री ि"ाक्षा के लिए कन्या गुरूकुल खानपुर कलां को शुरू किया। इन गुरूकुलों में बालक व बालिकाओं को वैदिक पद्धति से ि"ाक्षित किया जाता था। उस समय नारी स"ाक्तीकरण का अहम कदम था। आर्य समाज अनेक महानुभवों ने धारण किया। ग्रामीण क्षेत्र व ि"ाक्षा के क्षेत्र में सामुदायिक विकास किया। अनेक संस्थाओं को सहयोग भी दिया।

सरस्वती एन. (1998) स्वामी नित्यानन्द भजनमाला में आर्य समाज के ऊपर अनेक भजन गाए गए है।

अध्ययन का उद्धे"य

1. हरियाणा में आर्य समाज का वि"लेषण करना।
2. प्रणेता भक्त फूलसिंह के बारे में बतलाना।

भाोध प्रणाली

आँकड़े संचय पद्धति

इसमें प्राथमिक स्रोत व द्वितीय सोतों का प्रयोग हुआ है। आर्य समाज की स्थापना व प्रणेता भक्त फूलसिंह की मृत्यु पर्यन्त (1875–1942ई.) तक के काल का अध्ययन किया।

नमूना प्रारूप

शोध क्षेत्र के हिसाब से मैंने नियता"ा प्रतिचयन व सहुलियत प्रतिचयन का प्रयोग किया है।

आंकड़े वि"लेशण

साहित्य सर्वेक्षण पद्धति और ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रयोग किया गया है।

विवरण

20वीं शताब्दी में हरियाणा का समाज रूढ़िवादिताओं व अंधवि"वास से घिरा था। समाज को बुराईयों ने बुरी तरह से चपेट में ले रखा था। जिसकी झलक थोड़ी–2 आज भी देखने को मिलती है। समाज की स्थिति अत्यंत दयनीय व शोचनीय थी। वैदिक धर्म में संक्रमण लग चुका था। इसके पुनरूत्थान के लिए स्वामी दयानन्द ने 1875ई. में बंबई में आर्य समाज की स्थापना की तथा वेदों की ओर लौट चलो का नारा भी दिया। अनेक महापुरूष इस आन्दोलन से जुड़े और समाज के संक्रमण को मिटाने के लिए उन्होनें कार्य भी किया। सामाजिक उत्थान के लिए जगह–जगह महापुरूषों के द्वारा मठ, आश्रम, विद्यालय, वैदिक गुरूकुलों का प्रारंभ किया गया। ताकि आर्य समाज को बल मिल सके। आर्य समाज के प्रचार के लिए अनेक भजन मण्डलियां भजन गाती थी। हरियाणा क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार ढोलकों की थाप पर किया गया। आर्य समाज के भक्त फूलसिंह, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, स्वामी सुखराम आर्य, चौ. पीरू सिंह, चौ. मातुराम, महात्मा नारायाण स्वामी, पं. लेखराम आर्य, चौ. सुमेर सिंह, चौ. सुनहरा सिंह, महा"ाय फकीर चंद, श्री अमर सिंह, श्री जयप्रका"ा धुरन्धर, श्री स्वर्ण सिंह व पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का योगदान आर्य समाज में प्रणेता के रूप में अग्रिण पंक्ति में रहा।

जीवन परिचय

भक्त फूलसिंह का जन्म हरियाणा के सोनीपत जिले के माहरा गांव में 24 फरवरी 1885ई. में एक साधारण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम हरफूल था। इनके पिताजी का नाम तारा देवी था। इनको 1904ई. में पटवारी पद पर नियुक्ति सींख पाथरी गांव में मिली।

20 वर्ष की आयु में इनका विवाह लक्ष्मी देवी खर के साथ नारा (पानीपत) में किया गया था। सन 1914 में सुभाषिणी नामक पुत्री के जन्म के ढाई वर्ष बाद इनकी पत्नी लक्ष्मी देवी का देहांत हो गया। 1917 में इनके भाई की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी धूपकौर के साथ इनका पुनर्विवाह कर दिया गया। इनसे 1918 में एक पुत्री गुणवती का जन्म हुआ था।

सन् 1907ई. में ये आर्य समाज के संपर्क में आए थे। यहां से इनके जीवन में परिवर्तन आ गया। आर्य समाज के प्रणेता के रूप में भक्त फूलसिंह को जाना जाता है। ये आर्य समाज के अग्रिण पथ–प्रद"ाक थे। 14 अगस्त 1942 को पांच यवन हत्यारों द्वारा भक्त फूलसिंह को खानपुर गुरूकुल के प्रांगण में शहीद कर दिया गया। 16 अगस्त 1942ई. को गुरूकुल भैंसवाल कलां में वैदिक रीति–रिवाज के साथ भक्त जी का अंतिम संस्कार किया गया। भक्त जी के बारे में हम कह सकते हैं कि–

''हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मु"किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।''

आर्य समाज के भौक्षणिक कार्य आर भक्त फूलसिंह

हरियाणा में आर्य समाज से संबंधित अनेक संस्थाएं खोली गई। जो आज भी समाज को स"ाक्त बनाने में अपना योगदान दे रही हैं। इन संस्थाओं में मढ, आश्रम, विद्यालय, महाविद्यालय, कॉलेज और गुरूकुल थे। गुरूकुलों में छात्रों को वैदिक "िाक्षा पद्धति से "िाक्षा दी जाती थी। जो स्नातक निकलते थे वे सामाजिक कार्यों में लिप्त हो जाते थे।

दानवीर लाला ज्योति प्रसाद ने अपने गांव कंथल कलां की जमीन और 10 हजार रूपये नकद दिए थे। तब जाकर 13 अप्रैल 1912ई. को कुरूक्षेत्र गुरूकुल की नींव स्वामी श्रद्धानन्द के करकमलों द्वारा स्थापित की गई थी। 1919 में ही स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा भैंसवाल गुरूकुल की नींव स्थापित की गई जो भक्त फूलसिंह के प्रयासों से संभव हुआ। 1936ई. में कन्या गुरूकुल खानपुर कलां की नींव रखी गई। 16 मई 1915 को गुरूकुल झज्जर की आधारि"ाला स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रखी गइ। 17 अप्रैल 1939 गुरूकुल घरोंडा की स्थापना स्वामी भीष्म, स्वामी रामे"वरानन्द और वि"वकर्मा बंधओं (घरोंडा निवासी) की सहायता से की गई थी।

15 अक्टूबर 1956ई. को कन्या गुरूकुल नरेला की आधारि"ाला स्वामी व्रतानन्द द्वारा रखी गई। इस गुरूकुल के लिए 215 बीघे जमीन स्वामी ओमानन्द ने दान दी साथ में अपना तनम न भी इसी गुरूकुल को समर्पित रखा। आर्य प्रादे"िक सभा ने डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज करनाल, डी.ए.वी. कॉलेज पुण्डरी, कॉलेज और एजुके"ान, डी.ए.वी. हाई स्कूल खोले। आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य हाई स्कूल सिरसा, नरवाना, आर्य हाई स्कूल पानीपत आदि खोले। इसके अलावा जाट एंग्लों वैदिक स्कूल, हाई स्कूल व जाट स्कूल कैथल, जींद आदि खोले गए। इन सब संस्थाओं में वैदिक ि"ाक्षा पद्धति का पूरा प्रबंध था।

अनेक महानुभवों ने आर्य समाज के लिए कार्य किए। प्रणेता भक्त फूलसिंह के द्वारा चलाया गया कन्या गुरूकुल आज वि"वविद्यालय बन चुका है। यह वि"वविद्यालय समाज और नारी स"ाक्तीकरण में अपनी अहम भूमिका रखता है। यह समाज के उत्थान का एक स्तम्भ है। गुरूकुल ि"ाक्षा के उपलक्ष में स्वामी नित्यानन्द का एक भजन इस प्रकार था–

पढ़कर वेद ज्ञान को सुख दे सारे जहान को।
लड़का लड़की में ना भेद हो दोनों पढ़े शास्त्र वेद को।
मैं अपनी संतान को पढ़ाऊँ गुरूकुल में – 2।।

भुद्धि आन्दोलन और भक्त फूलसिंह

भक्त फूलसिंह ने आर्य समाज के नियम 'संसार का उपकार रखना इस समाज का मुख्य उद्धे"य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करना' तथा आर्य समाज के हरेक कार्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया था। 30 अगस्त 1922ई. को महाराजा रामपाल सिंह की अध्यक्षता में बैठक हुई। जनता को बताया गया जो हिन्दू अपने धर्म को बदल चुके हैं उनको वापिस अपने हिन्दू धर्म में उनकी मर्जी से शामिल करना है। इसी उपलक्ष में 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना आगरा में स्वामी श्रद्धानन्द के द्वारा 1923ई. में की गई थी। भक्त जी को पता लगा था कि होडल व पलवल में कुछ हिन्दू भाई शुद्ध होना चाहते हैं तो भक्त फूलसिंह तुरंत अपने साथियों के साथ वहां पहुंच गए। यहां भक्त जी ने शुद्धि के लिए 11 दिन का अन"ान किया था। सन् 1929ई. में रायपुर का केहरी सिंह मूला जाट शुद्ध होकर वैदिक धर्मी बना था। मटिण्डू निवासी हरिद्वारी सिंह ने

अपनी बेटी का विवाह केहरी सिंह से किया। इस विवाह में भाती भक्त फूलसिंह बने थे। उस समय यह विवाह एक आद"र्ा था क्योंकि केहरी सिंह शुद्धि के तहत हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हुआ था।

पूरे संयुक्त प्रांत में 419 गांवों के मुस्लिम राजपूतों को शुद्धि आन्दोलन के तहत हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया गया। प्रविष्ट होने वालों की संख्या लगभग साढ़े चार लाख थी। फिराजपुर की एक युवती की शुद्धि करके उसका नाम लक्ष्मी रानी रखा गया। डबवाली में आठ लड़के व 58 लड़कियों को शुद्ध किया गया। जींद में एक डॉ. सुलेमान की शुद्धि करके उनका नाम सुरेन्द्र शर्मा रखा गया। 1924ई. में आर्य समाज करनाल द्वारा रहतवान सिखों की शुद्धि कराई गई। इनका शुद्धि संस्कार कार्य वि"वामित्र तथा मुखराम ब्रह्मचारी के कर कमलों से कराया गया। कसौली में एक लड़की को शुद्ध करके उसका नाम जानकी रखा गया था। आर्य समाज रोहतक में भी चार नीलगर परिवारों की शुद्धि की गई। इनमें थे 1. चन्द्र का परिवार, 2. शेरसिंह का परिवार, 3 हो"ायार सिंह का परिवार, 4. मसुद्धी का परिवार

पूरे भारत वर्ष में शुद्धि का कार्य जोरों–"ोरों पर था। इसी आन्दोलन के तहत महा"ाय राजपाल और लेखराम की हत्याएं की गई थी। इसी फलस्वरूप अब्दुल र"ीद मुसलमान द्वारा 23 सिम्बर 1926ई को स्वामी श्रद्धानन्द जी की उनके पैतृक निवास पर गोली मारी गई। आर्य समाज के कार्यों के फलस्वरूप ही 14 अगस्त 1942ई. को रात 9 बजे भक्त फूलसिंह को गाली मारी गई। भक्त फूलसिंह आर्य समाज के अग्रिण व्यक्तियों में एक थे। वे आर्य समाज के कार्यों का बीड़ा अपने कंधों पर लिये हुए थे।

दलितोद्धार

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में समाज अनेक बुराईयों से घिरा था। उसमें छूआछूत और जाति प्राि समाज की गति"ीलता का कांटा थे। समाज में निम्न वर्ग के लोगों को कुएं से पानी लेना बाध्य था। हीनता की दृष्टि से उनको देखा जाता था। आर्य समाज ने हर सामाजिक बराई का खण्डन किया। समाज में हर वर्ग और जाति को प्रतिष्ठित बताया। समाज में उनका सम्मान मिले इस और हर जागरूक कदम उठाए। जो लोग समाज में दलितों को

हीनता से देखते थे उनके ऊपर स्वामी नित्यानन्द ने बहुत अच्छा भजन अपनी नित्यानन्द भजन माला में लिखा है जो इस पकार है–

हिंदू है मतलब के चार, बेमतलब परे हटते,
मतलब में बाप बनाले सब किसी का झूठा खाले।
जब बच्चा जने लुगाई, भंगन को बुलाले दाई,
सधे मतलब दें दुतकार, ना उसको पास बिठाते।

वेदों में वर्ण व्यवस्था का वर्णन कर्म के आधार पर किया गया है। जबकि समाज में बदल चुका था। आर्य समाज वेदों पर आधारित था जो हर बुराई का खण्डन करता था। लाला लाजपतराय ने दलितोद्धार के संबंध में अपने भाषण में कहा था कि–

''आर्य समाज दलित वर्ग को द्विज बनाकर अपने अन्दर शामिल करता है। जो भी योग्य है उन्हें गायत्री मंत्र यज्ञोपवोत धारण करने और हवन का अधिकार देता है। उनके साथ बैठकर भोजन करने और वैवाहिक संबंध आरम्भ करने का अधिकार देता है।''

स्वामी दयानन्द के समय ही दलिताद्धार का कार्य शुरू हो गया था। महर्षि दयानन्द ने एक नाई द्वारा बनाए गए हलवे, व परोसे गए हलवे को स्वीकार किया था। हरियाणा में 1912 से 1924ई. तक 150 निम्न वर्ग की जातियों को शुद्ध किया था। आर्य समाज ने अनेक दलित जातियों के प्रति कार्य किए। भक्त फूलसिंह ने मोढ गांव के चमारों की खातिर 23 दिन के अन"ान के बाद उनके लिए कुआँ बनवाया था। चौ. छोटूराम के हस्तक्षेप के बाद मोढ में कुआँ बना और उसी कुएं का जल पीकर भक्त फूलसिंह ने अपना अन"ान खोला था।

भक्त फूलसिंह और लोहारू आर्य समाज उत्सव

अप्रैल 1941 में आर्य समाज का उत्सव भक्त फूलसिंह के कहने पर रखा गया था। इस उत्सव में भक्त फूलसिंह, आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से स्वामी स्वतन्त्रतानन्द, आर्य भजन मण्डली के उपदे"ाक समर सिंह व भजनोपदे"ाक नौनंद सिंह जी लोहारू पहुंच गए। उत्सव के साथ–2 जलूस भी निकाला गया। यह जलूस स्वामी स्वतन्त्रतानन्द और भक्त फूलसिंह जी की अगवाही में निकाला गया। रियासती पुलिस द्वारा जलूस पर लाठी चार्ज

कर दो गई जिसमें भक्त फूलसिंह जी और स्वतन्त्रतानन्द जी को गम्भीर रूप से घायल किया गया। इन दोनों को दिल्ली के इरविन अस्पताल में दाखिल कराकर उपचार कराया गया।

पानीपत आर्य समाज जलूस और भक्त फूलसिंह

आर्य समाज के वार्षिक उत्सव से पहले जलूस निकाला जाता था। कुछ यवनों द्वारा विरोध करके जलूस पर प्रतिबंध लगवा दिया गया। भक्त जी से कुछ आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने इस मसले पर बात की। भक्त फूलसिंह जी तुरंत गुरूकुल विद्यार्थियों, स्नातकों और गांव वालों को लेकर पानीपत पहुंचे और सरकार द्वारा जलूस पर लगे प्रतिबन्ध को हटवा दिया। इस प्रकार ये पानीपत जलूस सफल और सबल माना जाता है। आर्य समाज जलसे के उपलक्ष में स्वामी नित्यानन्द ने अपने 'स्वामी नित्यानन्द भजनमाला' में आर्य जलसे के बारे में बड़ा सुन्दर भजन लिखा है जिसकी पंक्तियां इस प्रकार हैं–

'आर्य समाज मन्दिर के अन्दर सजा सजाया पिंडाल
सुन्दर वेदी पर रंग अपार देखन सब आना।
भंगी से ब्राह्मण तक भाई, यवन ईसाई सम्प्रदाई
सुनना वेद प्रचार देखन सब आना।।'

रोहतक गौर रक्षा सम्मेलन और भक्त फूलसिंह

रोहतक में आर्य समाज द्वारा दो दिन का गौ रक्षा सम्मेलन मदन मोहन मालवीय जी के नेतृत्व में किया गया। भक्त फूलसिंह जी इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष थे। भक्त फूलसिंह जी इस सम्मेलन के अग्रिम व्यक्ति थे। इस गौ रक्षा आन्दोलन के जलूस में लगभग 101 आदमी तिहाड़ जेल में गए थे।

निश्कर्श

भक्त फूलसिंह जी हरियाणा में आर्य समाज के अग्रिम नेता थे। जिन्होनें समाज के कल्याण के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उनका सामाजिक और शैक्षणिक योदान अतुलनीय था। आर्य समाज के प्रचार व प्रसार को हरियाणा की जनता ने दिल से

अंगीकार किया था। आर्य समाज की बातों के उपलक्ष में स्वामी नित्यानन्द जी के भजन की पंक्तियां इस प्रकार हैं–

'सारी आर्यों की बात मैंने लगती प्यारी
संध्या करे सुबह शाम, कैसा प्यारा ओइम नाम।
गांव मिलकर एक साथ बाल वृद्ध नर नारी,
करें यज्ञ हवन शुद्ध होजा पवन, हो शुद्ध वर्षात,
होई दूर सब बिमारी।
कहें विद्या पढ़ो, उन्नति ि"ाखर चढ़ो, पुष्ट हो जावेगा गात
सब रहो ब्रह्मचारी।

भक्त फूलसिंह आर्य समाज के लिए ि"ाक्षा, गौ रक्षा व नारी स"ाक्तीकरण के लिए एक जीवंत उदाहरण हैं। ि"ाक्षा संस्कृति के प्रति भक्त फूलसिंह जी पूरे आस्थावान थे। उनका पूरा जीवन अनुसरणीय है। समाज कल्याण में उनका पूरा जीवन समर्पित रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. सरस्वती, एन. (1998). स्वामी नित्यानन्द भजनमाला, *आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक,* (1) 30, 51.
2. विद्यामार्तण्ड, वि. (2006). श्री भक्त फूलसिंह का जीवन चरित्र, *आचार्य प्रिंटिंग प्रेस रोहतक,* (4) 112–114, 124–127.
3. रानी, आर. (2017). ि"ाक्षा में भक्त फूलसिंह सामाजिक योगदान व बलिदान, *International Journal of Research*, 4 (14) 1749-1752.
4. रानी, आर. (2018). ि"ाक्षा में भक्त फूलसिंह का योगदान, *International Journal of Advanced Research and Development*, 2 (3) 721-724.
5. www.blog.thearyasamaj.org/ स्वामी श्रद्धानन्द एवं शुद्धि आन्दोलन